# अध्याय 4

# भूगोल शिक्षा पध्दति एवं उपागम

## उद्देश

- भूगोल शिक्षण की विधियों के सम्प्रत्यय को समझ सकेगे।
- भूगोल श्क्षिण की सामान्य व विशिष्ट विधियों मं अंतर कर सकेंगे।
- भूगोल शिक्षण की विधियॉ को कक्षानुरूप प्रयोग कर सकेंगे।
- भूगोल शिक्षण की नवीन तकनीकों के गूण–दोषों को समझ सकेगे।
- भूगोल शिक्षण की विभिन्न कौशलों के घटकों के अनुरूप पाठ योजना का निर्माण कर सकेंगे।

## शिक्षण विधि का अर्थ

भूगोल प्राकृतिक व मानवीय विज्ञानों के मध्य स्थित एक महत्वपूर्ण विषय है जिसके शिक्षण की अपनी विधी है । भूगोल के ज्ञान एवं विषयवस्तु की दृषटि के साथ ही इस की शिक्षण विधियों में परिवर्तन एवं सम्वंध होता गया है। इन्हें पाठय विधियॉ भी कहा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कक्षा

में पढ़ाने के लिए अध्ययन के द्वारा जिस प्रणाली से ज्ञान एवं सुचनाओं को छात्रो तक पहूचाया तामा हैं उसे अध्ययन या शिक्षण विधि कहा जाता है। यह अध्यापक पयुक्त प्रणाली है. पायः कोई एक ही वीधी कीसी भी विषय को पढ़ाने के लिए पूर्ण नही होती है। इसलिए भूगोल शिक्षण के लिए यह आवष्यक हो जाता है कि वह भूगोल शिक्षा की विभिन्न विधियों के विषय में समूकचित ज्ञान रखे और शिक्षण विधियों के चयन में रूचि एवं योग्यता आदि का भी ध्यान दे।

**सारांश**

कक्षा में छात्रों को पढाने के लिए अध्यापक जिस प्रणाली से ज्ञान एवं सुचनाओं का उपयोग करते हुए छात्रों को पढ़ाता है उसे अध्ययन या शिक्षण विधि कहाा जाता ह। भूगोल अध्यापन को अधिकधिक रोचक और सहज ग्राहय बनाने के लिए अनेक अध्यापन विधियों को प्रयोग मे लाया जाता है। प्रायः कोई एक ही विधि किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए पूर्ण नही होता है। विषयागत प्रकरण ही नही. शिक्षण बिन्दुओ के अनुसार भी विधि में परिवर्तन करने की आवश्यकता हो सकत है। अतः शिक्षक को अनेकानेक विधियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेने की आवष्यकता होती है।

छात्रों का पढ़ाने के लिए अध्यापन जिन शिक्षण विधियां का प्रयोग करता है। उनहे अध्यापक प्रयुक्त प्रणाली कहा जाता है तथा छात्र या अधिगमकर्ता किसी विषय के बारे में जानकारी प्रापत करने के लिए जिन प्रणालियों का उपयोंग करते हैं। उन्हे हम अधिगमन प्रणाली या अध्यायन विधि कहते है।

भूगोल अध्ययन के लिए अध्यायपन विधियॉ. विभिन्न तकनीकी तथा शिक्षण कौषलो की आवश्यकता आज के युग में अधिक अनुभव की जाति हे । भूगोल की पाठ योजना में किसी भी एक शिक्षा विधी या कौशल का उल्लेख कर देना आवश्यक नही है परन्तु उस का सुविधानुसार प्रयोग करना अपरिहार्य ही होता है।

अ ाज के युग में शिक्षण विधिीया कौशल आदि छात्र केनदित बन चुकी है। क्युकि सिखाने से अधिक आजकल सीखने को ही अधिक महत्व दिया जाता रहा है।

शिक्षण विधियॉ. तकनीकों व शिक्षण कौशलों के मध्यम से अध्यापन द्वारा छात्रों का सर्वागीण विकास किया जा सकता है। छात्रों क व्यक्तित्व तथा चरित्र के विकास के लिए शिक्षण विधियॉ. कौशलों व युक्तयॉ का प्रयाग आवश्यक है। रूचिपूर्ण तथा व्यवस्थित ढंग से शिक्षण कार्य करने के लिए

इनकी आवश्यकता पडती है। सजीव अध्ययन अधिगम. वातावरण उत्पनन करना. ज्ञान को स्थायी करना और छात्रो को अध्ययन के लिए प्रेरित करना आदि कार्य को पूर्ण करने क लिए शिक्षण विधि. तकनीक व शिक्षण कौशला की आवश्यकत पडती है और वर्तमान परिप्रंक्षण ममं इनका उपयोग समौचीत है व इन सबके शिक्षण कार्य अधूरा प्रतीत हाता हैं ।